युद्ध और शांति

लियो टॉल्स्टॉय

की क्लासिक बच्चों के लिए

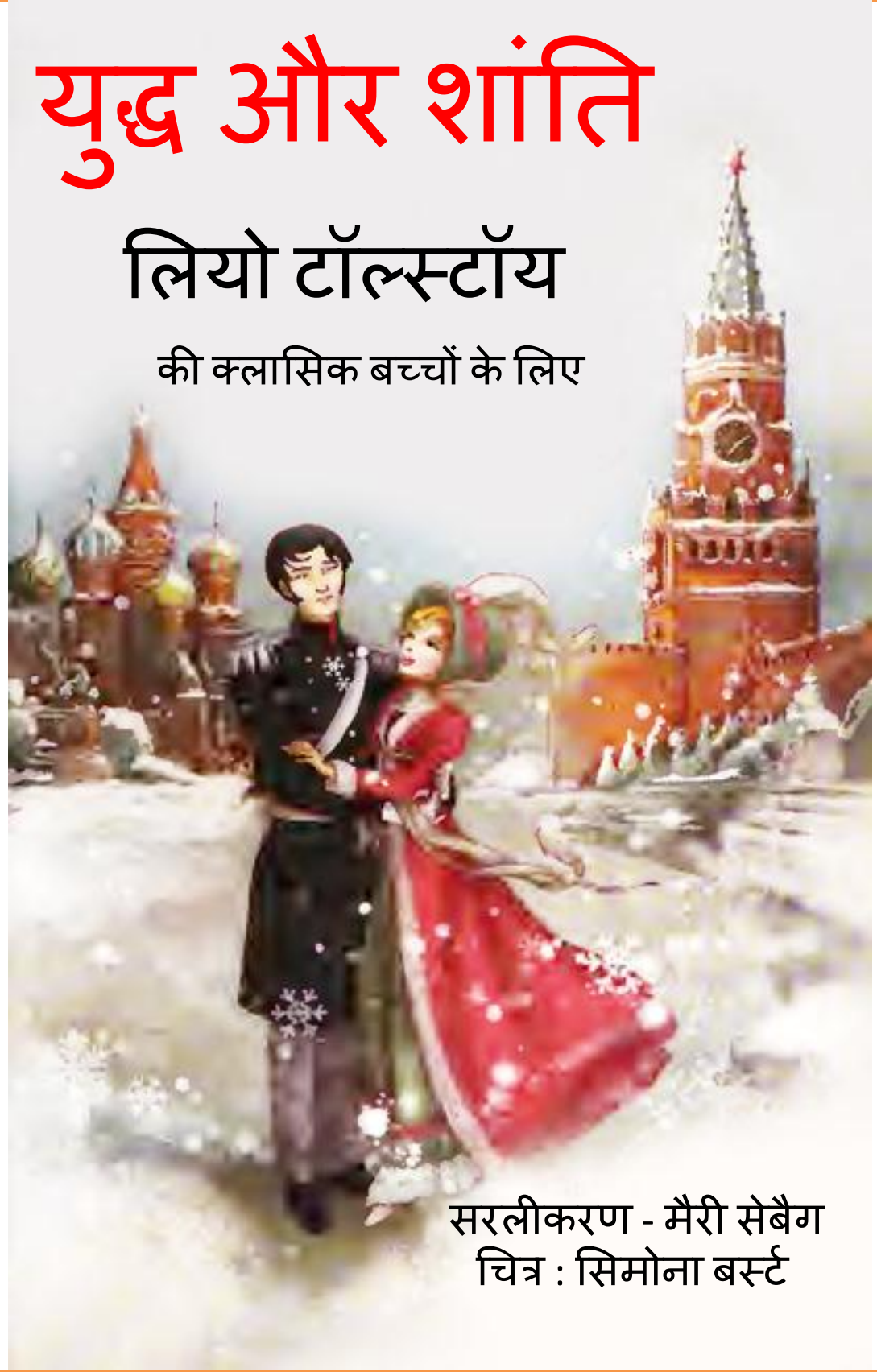

सरलीकरण - मैरी सेबैग
चित्र : सिमोना बर्स्ट

युद्ध और शांति

लियो टॉल्स्टॉय

की क्लासिक बच्चों के लिए

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

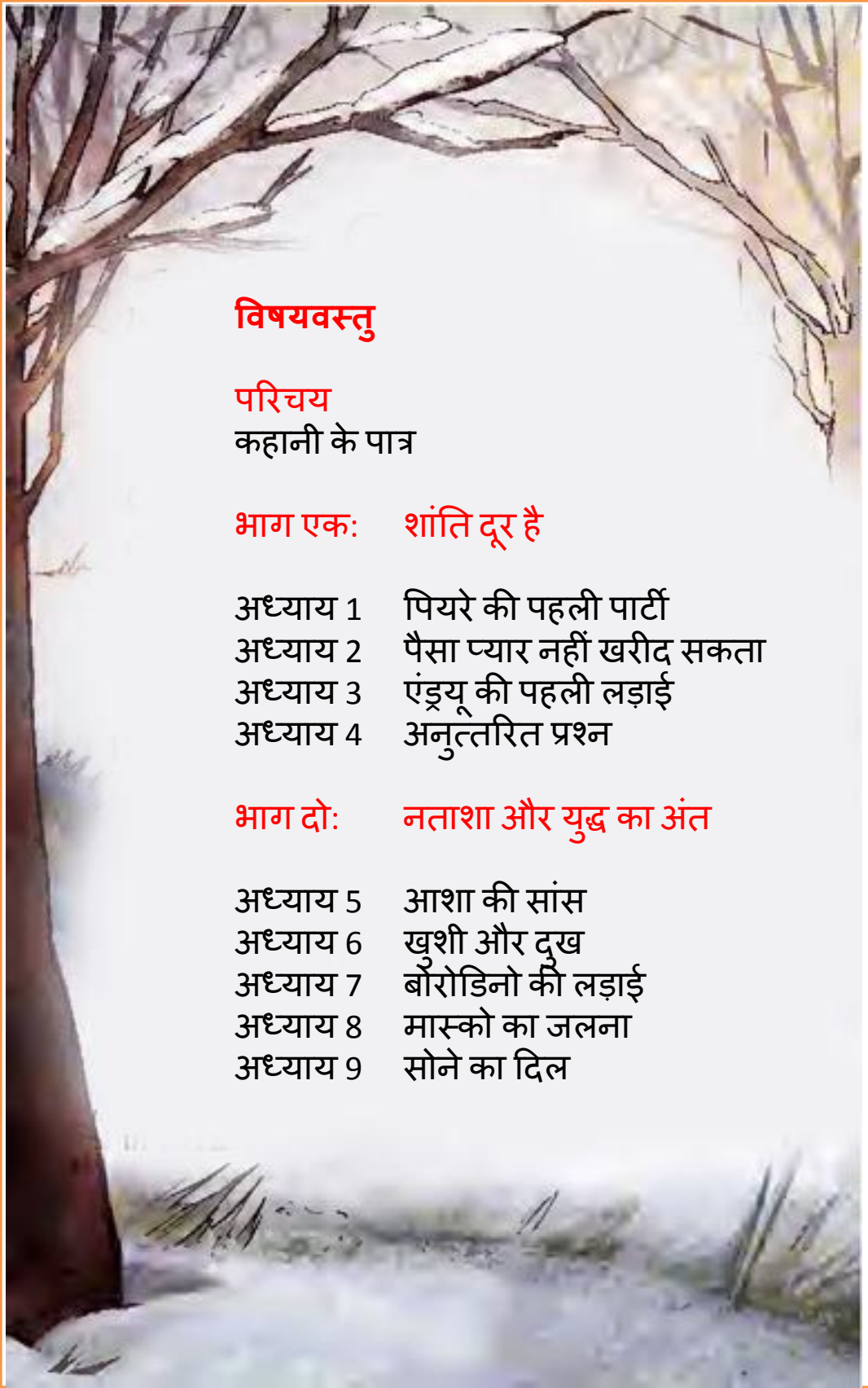

विषयवस्तु

परिचय
कहानी के पात्र

भाग एक: शांति दूर है

अध्याय 1 पियरे की पहली पार्टी
अध्याय 2 पैसा प्यार नहीं खरीद सकता
अध्याय 3 एंड्रयू की पहली लड़ाई
अध्याय 4 अनुत्तरित प्रश्न

भाग दो: नताशा और युद्ध का अंत

अध्याय 5 आशा की सांस
अध्याय 6 खुशी और दुख
अध्याय 7 बोरोडिनो की लड़ाई
अध्याय 8 मास्को का जलना
अध्याय 9 सोने का दिल

परिचय

पुस्तक "युद्ध और शांति" 19वीं शताब्दी में ज़ार अलेक्जेंडर। के शासनकाल में स्थित है. उनके परिवार, रोमानोव्स ने लगभग 200 वर्षों तक रूस पर शासन किया था. तब तक रूस में कुछ अत्यंत धनी, भूमि-स्वामी अभिजात वर्ग के लोग थे और लाखों गुलाम दास थे जो जमीन से बंधे थे.

यह बड़ी उथल-पुथल का समय था. कुछ रूसी अपने जीवन के तौर-तरीकों पर सवाल उठाने लगे थे, और पश्चिमी यूरोप की ओर एक नए दृष्टिकोण के लिए ताक रहे थे, हालांकि अधिकांश लोग सदियों पुराने तरीके को ही जारी रहने देना चाहते थे.

उसी समय, फ्रांस के सम्राट, नेपोलियन बोनापार्ट, पूरे यूरोप को जीतने और एकजुट करने के लिए दृढ़ और कटिबद्ध था. वो पहले से ही पश्चिम के अधिकांश हिस्सों को जीतने के लिए अपनी 'ग्रैंड आर्मी' का नेतृत्व कर चुका था और 1812 में उसने रूस पर आक्रमण किया. उसके बाद हुए भयानक युद्ध में 500,000 से अधिक लोग मारे गए.

यह उन कुछ घातक वर्षों की कहानी है - युद्ध और शांति, निराशा और साहस, और अंत में, प्रेम और ज्ञान की.

कहानी के पात्र

पियरे बेजुखोव

वासिली कुरागिन

एंड्रयू बोल्कॉन्स्की

लिसा ब्ल्कोन्सकाया

हेलेन कुरागिन

अनातोले कुरागिन

नताशा रोस्तोवा

निकोलस बोलोंस्की

भाग एक
शांति दूर है

अध्याय 1
पियरे की पहली पार्टी

पियरे बेजुखोव पार्टी में सभी से अलग दिख रहे थे. अन्य सभी मेहमान राजकुमार और राजकुमारियाँ थे. सभी सुगंधित, रत्नों, रेशम और कढ़ाई वाले वस्त्रों में चमक रहे थे. पियरे लंबा, अजीब, बल्कि मोटा था और उसने चश्मा पहना था. वो एक मरते हुए ड्यूक का नाजायज बेटा था, और चूंकि वो गरीब था, इसलिए हर कोई, विशेष रूप से उसके बुजुर्ग चचेरे भाई, प्रिंस वासिली उसे अपने से नीचे पद पर मानते थे. पार्टी में पियरे का केवल एक दोस्त था : प्रिंस एंड्रयू बोल्कॉन्स्की.

पियरे ने अपने मेज़बान की बात सुनी, "मुझे नेपोलियन से नफरत है! उसकी सेना यूरोप के हर उस देश को जीतते हुए गुज़रती है जिसे वो चाहता है. हमारी कोई भी मदद नहीं करेगा. इंग्लैंड और ऑस्ट्रिया निकम्मे हैं, केवल रूस ही, यूरोप को बचा सकता है! ठीक है? तुम्हें क्या लगता है, वसीली?"

"कोई भला क्या कह सकता है?" वसीली ने अपने लड़खड़ाते बेटे अनातोले और अपनी प्यारी बेटी हेलेन को देखकर उदास होकर जवाब दिया. वो एक अमीर पति को खोजने के लिए हेलेन को यहां लाया था - कोई भी ऐसा पति, जो अनातोले के भारी कर्ज को चुका सके.

"मैं ... ओह ... मेरा परिचय," पियरे, एंड्रयू को देखकर फुसफुसाया. वो हेलेन से अपनी आँखें हटाने में असमर्थ था. उसकी सुंदरता ठंडी लेकिन आकर्षक थी. वो मजबूर था.

एंड्रयू ने अपने कंधे उचकाए. वो अपनी पत्नी, लिसा को नृत्य करते हुए देख रहा था, और उसके होंठ एक उपहास में मुड़े हुए थे. "कभी शादी मत करना, पियरे," उसने कहा, "नहीं तो तुम भी अपनी स्वतंत्रता खो दोगे. मैं पार्टियों, गपशप और मूर्ख महिलाओं की जंजीर में जकड़ा हुआ हूं, ऐसी महिलाएं जो कुछ भी सोचने में असमर्थ हैं ..."

पियरे चकित था. वो हमेशा सोचता था कि भाग्य एंड्रयू पर मुस्कुराता था. एंड्रयू सुंदर, समृद्ध, और हर चीज में अच्छा था और वो खुद उसके विपरीत था. वास्तव में, एंड्रयू का जीवन सफलता से चमक रहा था, और उसके ऊपर, लिसा एक बच्चे को जन्म देने वाली थी.

लिसा ने एंड्रयू की तुच्छ झलक को देखा. वो रोते हुए उसके पास दौड़ी, "काश तुम लड़ाई पर नहीं जा रहे होते! मुझे तुम्हारे बिना बहुत अकेला महसूस होगा. और मैं बच्चे के आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ."

"तुम सेना में शामिल हो रहे हो! क्यों?" पियरे ने एंड्रयू से पूछा. एंड्रयू ने लिसा को कोई जवाब नहीं दिया. फिर लिसा निराश होकर दूर चली गई.

"क्योंकि मैं अपने जीवन से नफरत करता हूँ," एंड्रयू ने उत्तर दिया, "इसके अलावा, अगर लोग अन्य लोगों की मान्यताओं के लिए नहीं लड़ेंगे तो फिर कोई युद्ध ही नहीं होगा."

"कोई युद्ध नहीं - तो कितना शानदार होगा! क्या तुम नेपोलियन से लड़ने को भी सही मानते हो? वो बोलने की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और समानता में भी विश्वास करता है."

पियरे की तेज आवाज ने अचानक, बातचीत की गूंज बंद कर दी. हर कोई नेपोलियन से नफरत करता था और उससे डरता था.

"मुझे हेलेन के पास वो गधा नहीं चाहिए," वसीली ने अपनी बेटी को इशारा करते हुए सोचा.

पियरे ने उसे भीड़ में से हल्के से आगे बढ़ते हुए देखा. वो मुस्कुराते हुए आगे बढ़ रही थी जैसे सभी को उसकी सुंदरता की प्रशंसा करने का विशेषाधिकार हो.

"तुम्हें हेलेन पसंद है?" अनातोले ने पियरे से धीमे शब्दों में पूछा.

"तुम उसे कभी नहीं पाओगे. आज शाम तुम बाद में मेरी पार्टी में आना. वो इससे बहुत बेहतर होगी." उस रात अनातोले के दरवाजे पर, पसीने और धुएं की बदबू गली में फैल गई. पियरे ने हँसी और भालू की चीख सुनी. अंदर, सिर्फ मर्दों की ही पार्टी थी. वे भालू को परेशान करने के लिए उसकी जंजीर खींच रहे थे. बाकी लोगों की तरह ही पियरे भी पागलपन में फँसा था और भालू को उठाकर उसके साथ कमरे में चारों ओर नाच रहा था.

उन्हें बाकी की शाम कुछ याद नहीं रही - कैसे उन्होंने रास्ते में कुछ अभिनेत्रियों को देखने के लिए भालू को एक गाड़ी में धकेल दिया, कैसे एक पुलिसकर्मी ने हस्तक्षेप करने की कोशिश की, कैसे उन्होंने भालू को पुलिसकर्मी से बांध दिया और दोनों को नदी में फेंक दिया.

पियरे ने एंड्रयू के बारे में थोड़ा सोचा, एंड्रयू कभी भी ऐसी पार्टी में नहीं जाता और न ही कभी ऐसा व्यवहार करता. लेकिन पियरे के चरित्र में कुछ ऐसा था जिसके कारण वो लापरवाही से प्यार करता था.

अध्याय दो
पैसा प्यार नहीं खरीद सकता

बूढ़ा प्रिंस वसीली जानता था कि उसके चचेरे भाई पियरे के पिता मर रहे थे. वो उनसे अलविदा कहने के लिए नहीं गया था, बल्कि यह जानने के लिए गया कि बूढ़े का उत्तराधिकारी कौन था. उसे खुद भी विरासत का कुछ हिस्सा मिलनी की उम्मीद थी. उसने गुप्त रूप से वसीयत की तलाश की, लेकिन जब उसे वो मिली तो वो काफी डर गया. उसमें वारिस पियरे ही था. उसने पियरे की अवैधता को रद्द करने वाले कानूनी दस्तावेज भी पाए.

फिर पियरे, काउंट बेजुखोव बन जाएगा - एस्टेट, हवेली, गुलाम सब उसके पास होंगे और रूस में सबसे बड़ा भाग्य का मालिक होगा.

मुझे वो सब मिलना चाहिए, वसीली ने सोचा, उस गधे को नहीं.

वो उस वसीयत को नष्ट करने ही वाला था, उसके हाथ कागज़ों को आग में डालने के लिए तैयार थे, तभी मृत्युशय्या पर पड़े व्यक्ति को मिलने आए एक अन्य चचेरे भाई ने उसे रोका. वो दुखी पियरे को दिलासा देना चाहता था.

"अब सब खत्म हो गया है," पियरे रोया. वो अपने पिता से बहुत प्यार करता था.

एक गंभीर, सहानुभूतिपूर्ण मुंह बनाकर, वसीली ने एक गहरी, कर्कश आवाज में कहा, "मेरी हार्दिक सहानभूति, प्रिय लड़के लेकिन तुम्हारी विरासत के लिए बधाई. मैं नए भाग्य के आदी होने में तुम्हारी मदद करूंगा."

तुरंत, उसने फैसला किया: हेलेन, पियरे से शादी करेगी. वो खुद पियरे को रहने के लिए आमंत्रित करेगा. जब पियरे करीब होगा तो निश्चित रूप से उसकी चाल चल जाएगी.

पियरे जल्दी से हेलेन की सुंदरता के जादू में फंस गया. वो कुछ असमंजस में भी था. जब वो गरीब था तो सभी उसकी उपेक्षा करते थे. पर क्योंकि अब वो अमीर था, इसलिए सार्वभौमिक रूप से उसे मजाकिया, बुद्धिमान और प्रतिभाशाली माना जा रहा था. उसे अपने सामने अब एक उज्ज्वल भविष्य नज़र आ रहा था. उसने सिर्फ उसकी झलक देखी थी लेकिन वो अभी तक उसे प्राप्त नहीं हुआ था. हेलेन के साथ रहने के बाद उसके लिए यह भावना एक लालसा में बदल गई. हेलेन अब उसके इतने करीब आई कि पियरे अपनी सांस में उसके शरीर की गर्मी और खुशबू सूंघ सकता था जबकि हेलेन की आँखें अभी भी ठंडी थीं.

मुझे हेलेन से शादी करनी चाहिए, उसने सोचा. मुझे पता है कि कुछ सही नहीं है, लेकिन मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं कर सकता.

छह हफ़्तों के बाद, उनकी शादी हुई और वे सेंट पीटर्सबर्ग में पियरे के नए, बड़े और आलीशान घर में रहने लगे. वसीली ने पियरे को, खुदको और अपने बेटे को, एक उदार भत्ता देने के लिए राजी किया.

दुनिया ने सोचा कि पियरे इतनी खूबसूरत आकर्षक पत्नी पाकर बहुत भाग्यशाली होगा.

एक बार, पियरे ने हेलेन से पूछा कि क्या वो बच्चे चाहेगी. यह सुनकर हेलेन तिरस्कारपूर्वक हँसी, उसकी आँखें किसी छिपकली की तरह खाली और सख्त थीं.

"क्या तुम्हें सच में लगता है कि मुझे तुम्हारे बच्चे चाहिए? अब मेरे पास तुम्हारे पैसे हैं. अब तुम घर से बाहर निकल सकते हो! तुमने मुझे बोर कर दिया है."

तो मैंने इसलिए शादी की थी? पियरे ने तड़पते हुए सोचा.

मुझे पता था कि जब मैंने उससे कहा "मैं तुमसे प्यार करता हूँ," तो वो एक बहुत बड़ी गलती थी. पर अब मैं उसके साथ फंस गया हूँ.

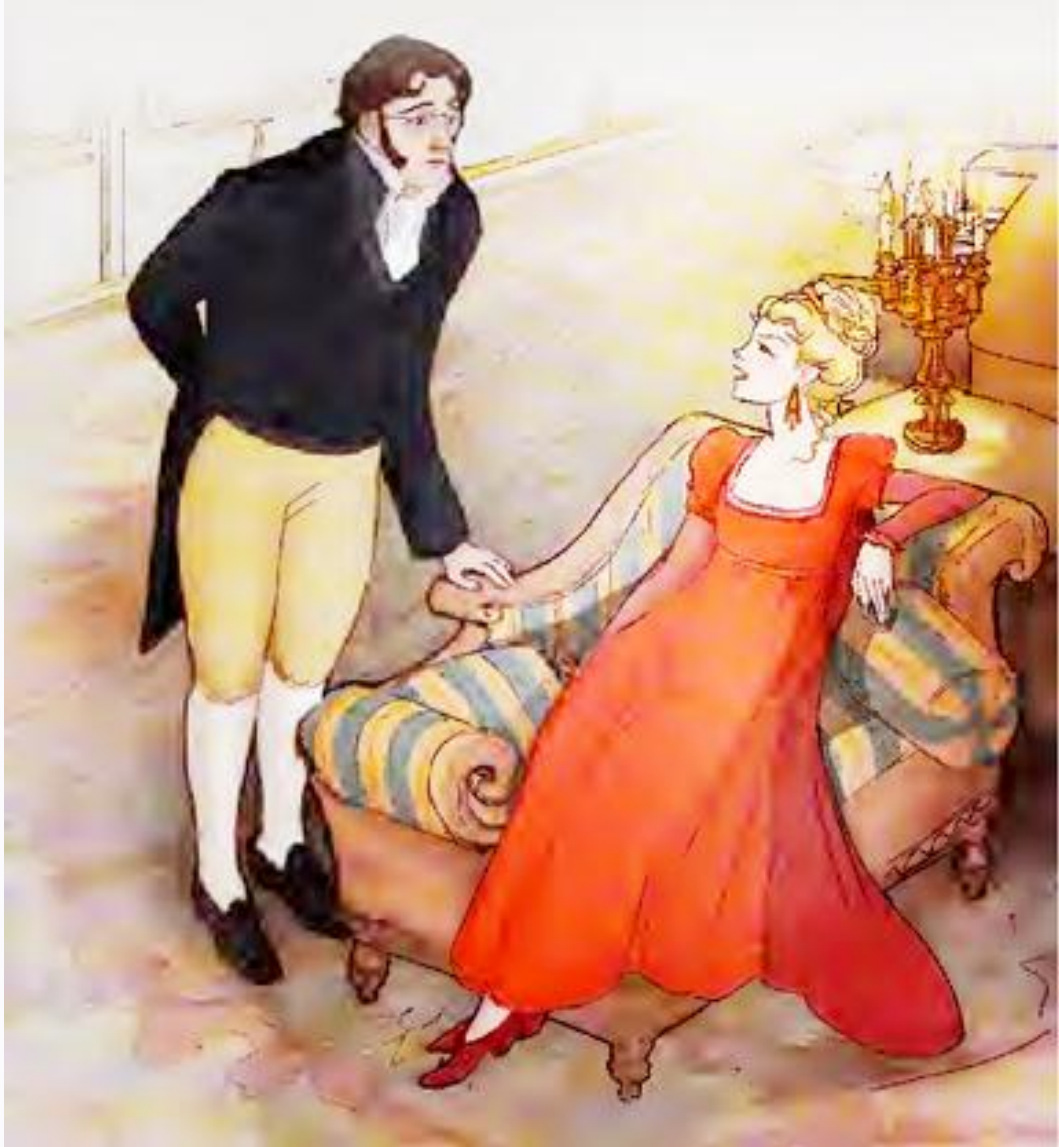

अध्याय 3
एंड्रयू का पहला युद्ध

फौज में भर्ती होने बाद प्रिंस एंड्रयू काफी बदल गया था. अब वो सुस्त पार्टियों में फंसकर निराश नहीं था. अंत में वो खुदको खुश महसूस कर रहा था - व्यस्त, फिट और सक्रिय. वो अब ऑस्ट्रियाई साम्राज्य में ऑस्टरलिट्ज़ चला गया था, जहाँ दुश्मन की फ्रांसीसी सेना, आगे बढ़ रही थी. उसे वो यात्रा बहुत पसंद आई. क्योंकि पूरी यात्रा में ढोल बज रहे थे, सैनिक गा रहे थे और घोड़ों की चापों की गड़गड़ाहट हो रही थी.

प्रिंस एंड्रयू जानता था कि उल्म में नेपोलियन ने, रूस के सहयोगियों ऑस्ट्रियाई लोगों को हराया था. इसका मतलब था कि अभियान पहले ही आधा हार चुका था. सभी को लगता था कि रूसी सेना कभी भी ताकतवर फ्रांसीसी को हरा नहीं सकेगी.

हम लोग एक घड़ी की तरह हैं एंड्रयू ने सोचा, जिसमें चाभी भरी जाती है जो पहियों को गति देती है और जिसका लक्ष्य व्यक्तिगत पुर्ज़ों से बहुत परे होता है. हमारी लड़ाई मानव इतिहास के डायल पर सिर्फ एक छोटी सी चाल है, हालांकि प्रत्येक सैनिक के लिए उसका मतलब जीवन या मृत्यु होता है.

उसने अपना सब कुछ रूस को देने की ठानी.

युद्ध की पूर्व संध्या पर, हवा कोहरे से घनी थी. ऑस्ट्रियाई सेना, रूसी सेना की बाईं ओर सरपट दौड़ी; रूसी सैनिकों का मध्य भाग दाहिने किनारे से अलग हो गया, और उन्हें उनके साथ जुड़ने का आदेश दिया गया था. इसका मतलब था कि घुड़सवार सेना को, पैदल सेना के सामने से गुजरना पड़ा. यह एक अनसुनी चाल थी जिसका भ्रम कुछ देर के लिए कोहरे की तरह घूमता रहा.

सभी ने सोचा था कि वो वास्तव में मायने नहीं रखता था, क्योंकि स्थिति में आने के लिए उनके पास अभी काफी समय बाकी था. नेपोलियन उनसे कम-से-कम छह मील दूर था.

लेकिन महान रणनीतिकार नेपोलियन ने उस मौके का फायदा उठाया. रूसियों ने सोचा कि वे जानते थे कि नेपोलियन कहाँ था? लेकिन नेपोलियन ने उन्हें चौंका दिया.

रात की आड़ और धुंध की चादर में नेपोलियन के सैनिक करीब आए. भोर के समय, जैसे ही सूरज निकला, नेपोलियन ने फायरिंग का आदेश दिया.

एंड्रयू ने सबसे पहले फ्रांसीसी सैनिकों की एक टुकड़ी को देखा था. वो क्षण आ गया है, उसने खुद सोचा, जब बंदूक की गोलियों, धुआं और भागते सैनिकों ने आतंक मचाया. तब मानक वाहक भी भाग गया, और उसने रूसी झंडे को गिरा दिया, जिससे भयभीत फौजियों ने उसे अपने पैरों से रौंदने और उसे फाड़ने लगे.

"नहीं!" एंड्रयू चिल्लाया. गुस्से से उसका दम घुट रहा था.

एंड्रयू ने झंडा पकड़ा और अपने घोड़े से छलांग लगाई और सैनिकों को पुकारा: "आगे बढ़ो!"

अपने भारी वजन के बावजूद, वो झंडे को सीधा रखते हुए आगे बढ़ा. उसने दुश्मन का सामना करने के लिए बटालियन का नेतृत्व किया.

उसने चारों ओर गोलियों की आवाज़ सुनी, और सैनिकों के जमीन पर गिरते ही पीड़ा से चीखते हुए सुना. एक गोली उसकी बगल में लगी, लेकिन फिर भी वो आगे बढ़ने के लिए खुदको विवश महसूस कर रहा था. फिर उसे बहुत गुस्सा आया क्योंकि दर्द उसे विचलित कर रहा था.

यह क्या है... मैं गिर रहा हूँ... उसने सोचा. कुछ सेकंड बाद वो गिर गया.

उसने अपने ऊपर के आकाश को देखा, अथाह ऊँचा, और शांत, जो ज़मीन पर चल रही चीख-पुकार और लड़ाई से बिल्कुल अलग था.

मुझे यह पहले क्यों नहीं पता चला? उसे आश्चर्य हुआ. मैं कितना खुश हूँ मुझे उसका अब पता चला है. अनंत आकाश के आलावा बाकी सब व्यर्थ और झूठ था.

शाम को, नेपोलियन, धाराशाही रूसी सैनिकों के बीच चला और उसने अपनी जीत का सर्वेक्षण किया.

"एक अच्छी मौत," उसने एंड्रयू को देखते हुए टिप्पणी की.

एंड्रयू जानता था कि वो नेपोलियन ही बोल रहा था. लेकिन वो उस क्षण अपने शरीर में जीवन वापिस लाने की मदद की कामना कर रहा था. अब उसे जीवन इतना सुंदर लग रहा था. आज उसने जीवन के सही मायने को सीखा-समझा था. उसने अपनी सारी शक्ति इकट्ठी कर ली और कराह उठा.

"अरे, वो जीवित है, उसे स्ट्रेचर पर रखो और उसे फील्ड अस्पताल ले जाओ."

स्ट्रेचर पर हर झटके के साथ, एंड्रयू को असहनीय दर्द हुआ. लेकिन फिर उसने उस आकाश की शांति के बारे में सोचा, और लिसा अपनी गर्भवती पत्नी के बारे में भी, जो घर पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी.

अध्याय 4
अनुत्तरित प्रश्न

हफ्तों बाद, राजकुमारी लिसा को एंड्रयू के कर्नल का एक पत्र मिला.

> तुम्हारा पति लापता है, शायद वो मर गया है. वो एक हीरो जैसे लड़ा और जब वो गिरा तो उसके हाथों में रेजिमेंट का झंडा था. उसका शव तक नहीं मिला...

लिसा रोई नहीं. वो केवल अपने अजन्मे बच्चे के बारे में सोचती रही.

"मैं तुम्हें बहुत प्यार करूंगी," उसने बच्चे से यह वादा किया. जैसे-जैसे महीने बीतते गए, उसने अपने बढ़ते पेट को सहलाया.

जब प्रसव पीड़ा शुरू हुई, नौकरों ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और डॉक्टर को बुलाने भेजा.

फिर घोड़ों के खुरों की गड़गड़ाहट आई जो उसके दरवाजे की ओर दौड़ रहे थे. लिसा ने अपने बिस्तर से देखा - वो डॉक्टर नहीं बल्कि एंड्रयू, युद्ध से वापस आ रहा था. उसका फर कोट, बर्फ से सफ़ेद था. उसका चेहरा बदला हुआ और नरम था और उसका मिज़ाज़ भी बदला हुआ लग रहा था.

"मेरी प्रिय," एंड्रयू ने कहा. वो शब्द उसने पहले कभी लिसा को चुंबन देते समय भी इस्तेमाल नहीं किए थे. लेकिन लिसा को शायद इस बाद एहसास ही नहीं हुआ कि एंड्रयू आया था. वो एक भयंकर पीड़ा की चपेट में थी. जब डॉक्टर पहुंचा तो उसने मरीज की देखभाल के लिए उन्होंने एंड्रयू को कमरे से बाहर जाने को कहा.

उसके बाद एक भयानक चीख सुनाई दी. उसके बाद एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई. जैसे ही एंड्रयू को उस ध्वनि के आनंदमय अर्थ का एहसास हुआ, डॉक्टर ने उसे अंदर बुलाया. लिसा अभी भी पहले की तरह ही लेटी हुई थी. वो बिल्कुल उसी स्थिति में थी जिसमें उसने उसे सिर्फ पांच मिनट पहले देखा था. मगर वो मर चुकी थी.

एंड्रयू को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसकी आत्मा टूट गई हो. उसे लगा जैसे वो एक ऐसे पाप का दोषी हो जिसे वह कभी नहीं भूल सकता था. अब वो लिसा को अपने दिल की तमाम बातें बता नहीं सकता था. उसके लिए बहुत देर हो चुकी थी. उसने रोते-बिलखते बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया. फिर उसने अपनी पत्नी के मोम जैसे पीले चेहरे विदाई देने के लिए चूमा.

इस बीच, पियरे की शादी टूटने की कगार पर थी. उसने ऐसी अफवाह सुनी थी कि अब हेलेन, डोलोखोव नाम के एक आदमी के साथ घूम-फिर रही थी.

पियरे, दुखी और उग्र था. वो दिमाग में यह कल्पना कर रहा था कि हेलेन, उसके साथ नहीं बल्कि डोलोखोव के साथ प्यार करती होगी.

वो यह भी सोच रहा था कि अब उसके सभी दोस्त उसे मूर्ख समझते होंगे क्योंकि वो अपनी पत्नी को खुश करने में असमर्थ रहा था. फिर गुस्से में आकर उसने डोलोखोव का सामना किया.

"तुम बदमाश हो!" वो चिल्लाया, "मैं तुम्हें एक द्वंद-युद्ध लड़ने की चुनौती देता हूं!"

"कल," डोलोखोव सहमत हुआ.

द्वंद-युद्ध एक देवदार के जंगल में हुआ जहाँ अभी-अभी बर्फ पिघली थी. विरोधी अलग-अलग खड़े थे, उनकी तलवारें दूरी को दिखाने के लिए जमीन में धंसी थीं.

पियरे ने पहले कभी पिस्तौल नहीं चलाई थी.

मैं भागना चाहता हूं या खुद को दफनाना चाहता हूं, उसने सोचा.

उसने कांपते हुए गोली चलाई. उसे इतनी जोर के धमाके की उम्मीद नहीं थी. पर धुएं में उसने डोलोखोव को बर्फ में बेसुध पड़े देखा.

"मूर्खता ... मेरी गलती ..." वो भयभीत होकर बुदबुदाया. उसे पक्का महसूस हुआ कि उसने डोलोखोव को मार डाला था. डोलोखोव केवल घायल हुआ था, लेकिन पियरे ने खुद को एक हत्यारे जैसा दोषी महसूस किया क्योंकि उसने हेलेन के दोस्त को चोट पहुंचाई थी.

हेलेन घर पर पियरे की प्रतीक्षा कर रही थी, "तुम्हें पता है कि उस द्वंद ने क्या साबित किया?" हेलेन ने उसे ताना मारा. "तुम मूर्ख हो. मैं डोलोखोव को चाहती हूँ क्योंकि वो तुमसे ज्यादा होशियार है, लेकिन वैसे मैं उससे प्यार नहीं करती हूँ."

"बेहतर होगा कि हम अलग हो जाएं," पियरे ने एक टूटे हुए आदमी की तरह बड़बड़ाते हुए कहा.

"यह तभी संभव होगा जब तुम मुझे भारी सम्पत्ति दोगे."

"तुम जो चाहो वो ले लो," पियरे ने कहा, "मैं तुम्हें छोड़कर कहीं और चला जाऊँगा."

पियरे को इस बात की परवाह नहीं थी कि वह कहाँ जायेगा. वो अपने ही विचारों से प्रताड़ित था, क्या बुरा है? अच्छा क्या है? उसने अचरज किया, प्रेम क्या है? मैं किसके लिए जियूं? और फिर, कौन सी अनदेखी शक्ति, जीवन को नियंत्रित करती है? उसे उन सभी प्रश्नों का केवल एक ही उत्तर नज़र आ रहा था - तुम जब मरोगे तो फिर सब कुछ जान जाओगे, या फिर सवाल पूछना बंद कर दो.

लेकिन उसके लिए मौत का ख्याल भी भयानक था.

भाग दो
नताशा और युद्ध का अंत

अध्याय 5
उम्मीद की सांस

कई महीनों तक पियरे रूस में इधर-उधर घूमता रहा. वो संतों के एक समूह से मिला जिन्होंने उसकी मदद की. उन्हें सुनकर और उनसे बात करके उसने महसूस किया कि उसने हमेशा अपने बारे में ही सोचा था, दूसरों के बारे में नहीं. वो आलसी, खुद के बारे में सोचने वाला और तेज क्रोध करने वाला था. उसने जीवन के प्रति अपने पूरे दृष्टिकोण को बदलने का फैसला किया.

सबसे पहले, उसने अपने सभी गुलामों को मुक्त किया, फिर उसने अपनी जायदाद पर अस्पताल और स्कूल बनवाए.

अच्छा करना आसान है. लेकिन उसने खुद से कहा कि लोग, अच्छे कामों पर बहुत कम ध्यान देते हैं. उसने हेलेन को वापस लेने का संकल्प लिया; वो चीजों को ठीक करने की कोशिश करेगा.

ऐसा करने से पहले, वो अपने पुराने दोस्त, एंड्रयू से मिलने गया. दोनों ने गर्दिशें झेलीं थीं. पियरे ने अपनी शादी में, और एंड्रयू ने युद्ध में अपने घावों से और अब वो अपनी पत्नी की मृत्यु से भी पीड़ित था.

“मुझे लगता है कि भगवान हमें अच्छा करने की कोशिश में खुद को खुश कर रहे हैं," पियरे ने शर्माते हुए कहा. पियरे को अभी भी एंड्रयू का खौफ था.

वे एंड्रयू के छोटे बेटे निकोलस के साथ शाम की सैर कर रहे थे. पियरे ने सूर्यास्त की गर्म पीली चमक से भरे आकाश की ओर इशारा किया.

"वहां ऊपर, वो शानदार संपूर्ण स्थान है जहाँ हम पहुँचने का प्रयास करते हैं."

एंड्रयू उदास रूप से अपने नन्हे निकोलस को देख रहा था. आकाश ने उसे ऑस्टरलिट्ज़ में अपने अनुभव की याद दिला दी, और फिर, लिसा की मृत्यु के बाद पहली बार, उसके भीतर कुछ आनंदमय जाग उठा.

वो सोच रहा था शायद एक दिन एक नया जीवन उसका इंतजार करेगा. "तुम सही कह रहे हो, हमें खुशी की संभावना पर ज़रूर विश्वास करना चाहिए."

फिर उसने छोटे निकोलस को चूमा और पियरे के प्रति आभारी महसूस किया. उस सप्ताह उसे एक डांस पार्टी का निमंत्रण मिला जिसे उसने इनकार कर दिया. हो सकता है कि वो अपने एकांत से खुद को जगाए और निमंत्रण को स्वीकार करे.

और, उस डांस पार्टी में उसकी मुलाक़ात एक युवा लड़की एंड्रयू नताशा रोस्तोवा से हुई.

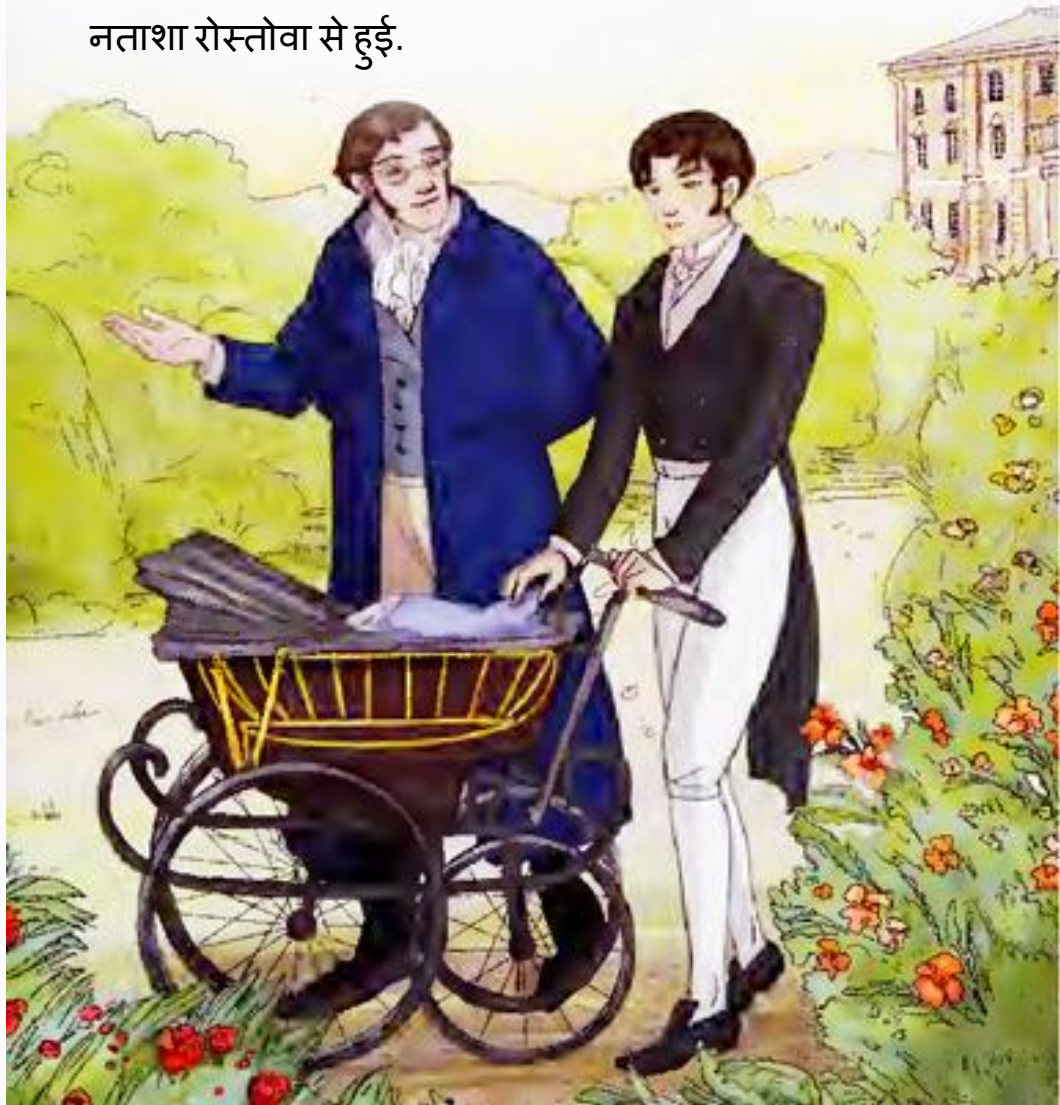

अध्याय 6
आनंद और दुःख

नताशा पहले कभी ग्रैंड डांस पार्टी में नहीं गई थी. एक अँधेरी, सर्द गाड़ी में बैठी, उसने तेज़ रोशनी वाले कमरे, फूल, संगीत, नृत्य, रूस के सम्राट और सेंट पीटर्सबर्ग के सभी शानदार लोगों की भव्यता की कल्पना की थी. वो नाचने वाले डांसिंग शूज़ पहने थी और उसके पैर नाचने को उतावले थे. उसे बताया गया था कि उसे ऐसा व्यवहार करना चाहिए था जैसे वो राजसी परिवार की हो. लेकिन जब वो वहां पहुंची तब उसे सब कुछ अपनी कल्पना से भी बेहतर दिखा. उसके बाद वो अपनी उत्तेजना रोक नहीं पाई.

"बहुत सुंदर," उसे मेजबान ने कहा, और उसकी उंगलियों को चूमा.

"सफेद पोशाक में एक युवा लड़की, जिसके बालों में गुलाब का फूल हो - इस अवसर के लिए बिल्कुल सही है."

नताशा को शर्म आ रही थी. निश्चित रूप से वो शाम उसके लिए दुख या आनंद लाने की तैयारी में थी.

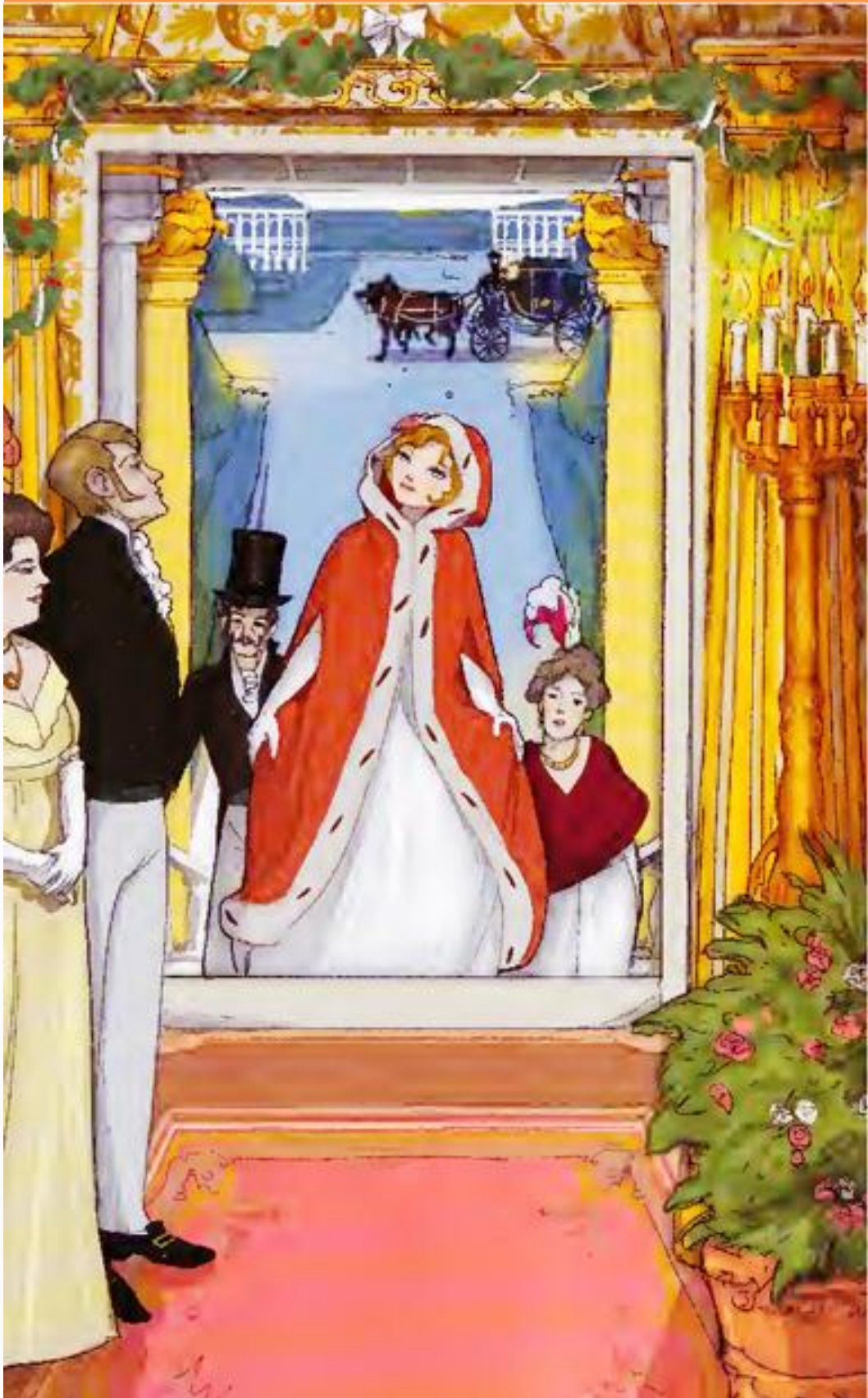

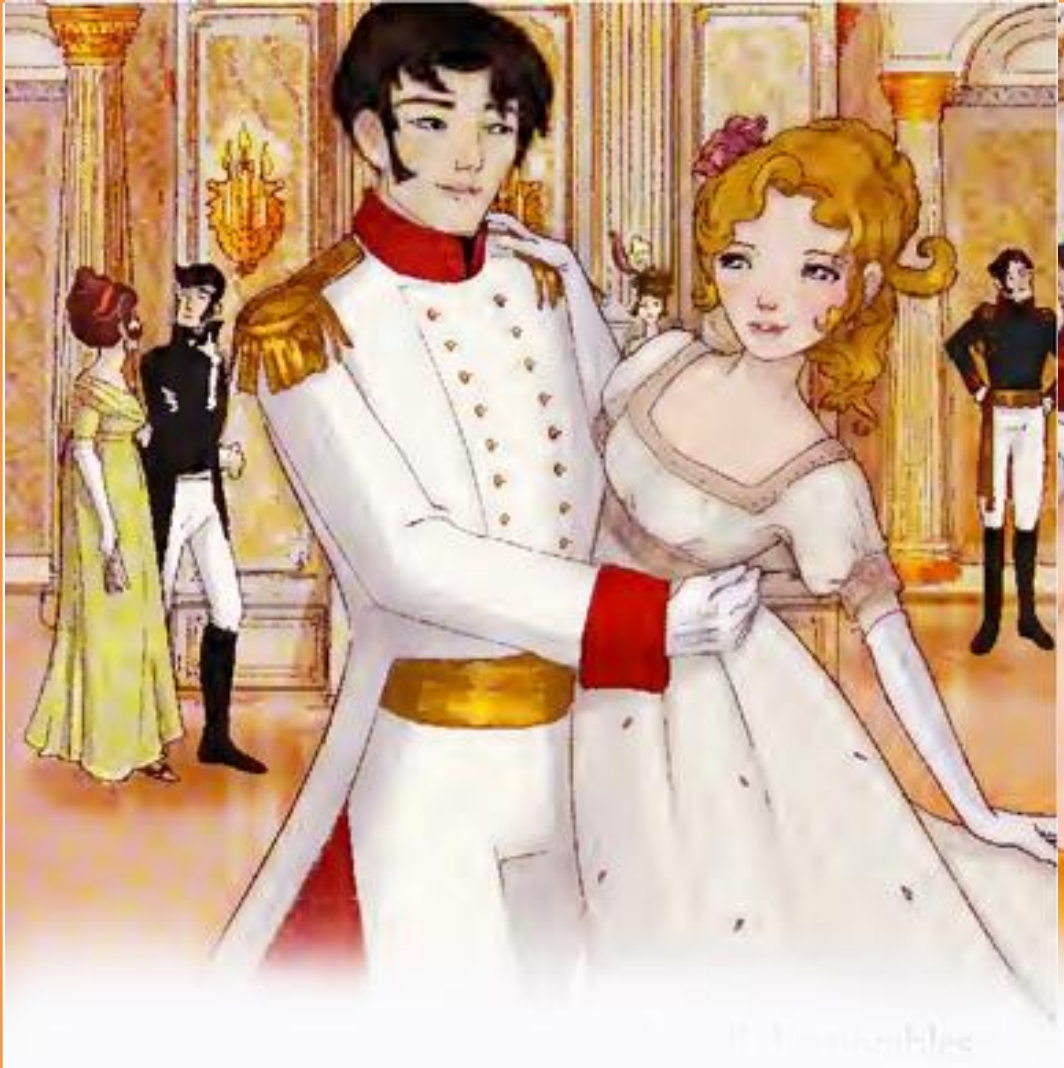

नताशा के माता-पिता ने इशारा करके उसे सभी उल्लेखनीय लोगों के बारे में बताया.

"वहाँ प्यारी काउंटेस हेलेन बेजुखोव है, जो अपने चश्मा पहने हुए पति पियरे के साथ खड़ी है. और वो हेलेन का भाई, अनातोले है."

"बहुत सुंदर," नताशा ने बड़बड़ाया.

"और वो सफेद वर्दी में हैं प्रिंस एंड्रयू बोल्कॉन्स्की. वो तुमसे मिलना चाहते हैं."

"क्या तुम नाचोगी?" एंड्रयू ने पूछा.

नताशा ने जमकर डांस किया, उसके पैर तेज़ी से थिरकने लगे और उसका चेहरा खुशी से चमकने लगा. एंड्रयू ने उसकी पतली कमर को पकड़ा और उसके आकर्षण से उसका दिल गरमाया.

"अगर वो मेरी पत्नी बनेगी तो कितना अच्छा होगा," एंड्रयू ने सोचा. जबकि नताशा संगीत की धुन पर एंड्रयू की बाहों में घूमती हुई सोच रही थी, "मैं बहुत खुश हूँ ... अगर मैं ऐसा महसूस करती हूँ तो दुनिया बहुत बुरी नहीं हो सकती है."

नृत्य के बाद एंड्रयू, नताशा से अक्सर मिलता रहा.

उसने पियरे से कहा, "जब मैं नताशा के साथ होता हूं तो मेरे जीवन में आनंद और प्रकाश होता है; और जब हम दूर होते हैं, तो फिर हम उदासी और अंधेरा महसूस करते हैं."

"मैं समझता हूँ," पियरे ने उदास होकर कहा. उसने अपनी खुद की शादी के बारे में सोचा जिसने उसे अंधेरे के अलावा कुछ नहीं दिया था. नताशा की अपील और प्यार के लिए उसकी तत्परता ने उसे भी सोचने पर मजबूर किया. अगर मैं आज़ाद होता, तो मैं भी उसे चुन सकता था. "सच में, मैं तुम्हारे लिए खुश हूँ, क्या तुम उसे शादी का प्रस्ताव दोगे?"

"मैं पहले ही उसे प्रस्ताव दे चुका हूं, और उसने वो स्वीकार भी कर लिया है."

नताशा के माता-पिता को लगा कि वो अभी शादी के लिए बहुत छोटी थी. उन्होंने एक साल की प्रतीक्षा पर ज़ोर दिया.

"लेकिन मैं उससे प्यार करती हूँ," नताशा ने विरोध किया, "वो एक प्रिय, चतुर व्यक्ति है."

"तुम्हें इंतजार करना ही होगा," माता-पिता अड़ गए.

एंड्रयू सहमत हो गया, "बस एक साल की ही तो बात है. अब मेरे घाव भर गए हैं, नताशा. अब मुझे युद्ध लड़ने के लिए फिर से सेना में शामिल होना चाहिए. क्योंकि फ्रांस की सेना रूस के करीब आती जा रही है. जब मैं वापस आऊंगा तो हम शादी करेंगे. भगवान न करे कोई मुसीबत आए. लेकिन परेशानी में तुम और तुम्हारा परिवार, हमेशा पियरे से बात कर सकता है. उसका सोने का दिल है, और वो सब कुछ समझता है."

एंड्रयू के जाने के बाद नताशा काफी दुखी हुई. वो अपने माता-पिता के साथ गांव में रहने के लिए चली गई. लेकिन कुछ महीने बाद, उसे मास्को में दोस्तों के साथ रहने का निमंत्रण मिला जिसे उसने स्वीकारा.

मॉस्को में, नताशा, पियरे की पत्नी हेलेन से मिली.

हेलेन ने कहा, "तुम गांव में दफन रहने के लिए एक बहुत सुंदर मोती हो." हेलेन के पास सामान्य शब्दों में चापलूसी करने की अपार क्षमता थी. "तुम्हें मुझसे बार-बार मिलना चाहिए. मेरे पास यहां मास्को के साथ-साथ सेंट पीटर्सबर्ग में भी एक हवेली है. मैं यह भी चाहती हूँ कि तुम मेरे भाई अनातोले से मिलो."

अनातोले के ऊपर सेंट पीटर्सबर्ग में भारी कर्ज चढ़ गया था, इसलिए उसके पिता, प्रिंस वासिली ने उसे मॉस्को में पियरे से पैसा चूसने के लिए भेजा. अनातोले ने चुपके से एक पोलिश लड़की से शादी कर ली थी. लेकिन बाद में उसे छोड़ भी दिया और अब वो कुंवारे होने का नाटक कर रहा था. चाहे परिणाम कुछ भी हो, वो खुद का मनोरंजन करने में विश्वास करता था. वो दूसरों को पहुंचाई चोट की कोई परवाह नहीं करता था.

नताशा ने अनातोले से ओपेरा में मुलाकात की. वो उसके बात करने के तरीके से बता सकती थी कि अनातोले उस पर मोहित हो गया था. उससे नताशा के अंदर भी कुछ हुआ.

"मुझे तुमसे दुबारा मिलना है," अनातोले ने भीख माँगी. "कृपा इस फूल को मेरे वादे के रूप में स्वीकार करो."

"अरे नहीं," नताशा ने सोचा, "मैं खो गई हूँ. मुझे क्या हो रहा है?"

डर ने उसे अभिभूत कर दिया. जो दृढ़ता उसने खुद और अन्य पुरुषों के बीच महसूस की थी वो गायब हो गई थी. एंड्रयू से लग्न होने के बावजूद वो खुद को अनातोले से मोहित महसूस कर रही थी.

"तुम खुद आनंद क्यों नहीं लेतीं?" हेलेन हँसी. क्योंकि हेलेन उम्र में उससे इतनी बड़ी थी, नताशा को हेलेन की बात सही लगी. अनातोले के साथ बाहर जाने में कोई बुराई नहीं है, कुछ भी नुकसान नहीं...

लेकिन अनातोले के इरादे कुछ और ही थे.

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ, प्यारी नताशा," वो फुसफुसाया, "मेरे साथ आओ, मैंने पहले ही एक पादरी की व्यवस्था की है जो हमारी शादी करवाएगा."

"मुझे ज़रूर उससे प्यार हो गया होगा नहीं तो ऐसा हरगिज़ नहीं होता," नताशा ने सोचा. उसने अनातोले की हर बात पर विश्वास किया. वो नहीं जानती थी कि अनातोले पहले से शादीशुदा था. उसे यह भी नहीं पता था कि उसने जो समारोह आयोजित किया था वो एक नकली शादी थी.

नताशा ने एंड्रयू को लिखा, जो कहीं बहुत दूर लड़ रहा था. उसने सगाई तोड़ने की बात लिखी. उसने हेलेन को भी सब कुछ बताया. हेलेन ने पियरे को सूचित किया कि नताशा, अनातोले के साथ भागने वाली थी.

"क्या?" पियरे चौंककर गरज उठा. "यह तो राक्षसी है! तुम्हारा भाई तो पहले से ही शादीशुदा है. वो नताशा जैसी युवा लड़की को पूरी तरह तबाह करने के अलावा भला और क्या कर सकता है! मुझे उन्हें तुरंत रोकना चाहिए."

वह अनातोले को खोजने के लिए दौड़ा. "तुमने नताशा को धोखा दिया है! तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई!" पियरे ने शुरू किया. फिर उसने अनातोले के चेहरे पर भी वही कर्कश मुस्कान देखी जो उसने पहले हेलेन पर देखी थी जब उसे पैसे चाहिए थे. निराश होकर, पियरे ने अपना बटुआ खोला और उसमें से मुट्ठी भर नोट निकाले, "यह सब लो. अब चले जाओ. तुम सेना में भर्ती होकर असली आदमी की तरह क्यों नहीं काम करते?“

इसके बाद, उसने नताशा को देखा, जो अभी भी अपने फर वाले लबादे में लिपटी हुई थी और उस गाड़ी का इंतजार कर रही थी जिसे अनातोले ने उनके भागने के लिए मंगाई थी.

जिस तरह से नताशा ने एंड्रयू के साथ व्यवहार किया था उससे पियरे बहुत गुस्से में था. भला नताशा इतनी क्रूर कैसे हो सकती थी?

नताशा को बहुत शर्म आ रही थी और वो बोल नहीं पा रही थी. पियरे में दया और कोमलता उमड़ पड़ी क्योंकि उसने महसूस किया कि कैसे नताशा की भावनाओं ने उसे एक उग्र धारा में शक्तिहीन कर दिया था. नताशा तर्क और सुरक्षा से परे थी.

"क्या तुम उस दुष्ट आदमी अनातोले से प्रेम करती हो?"

"उसे दुष्ट मत कहो... उसे प्यार ... ? ओह, मुझे नहीं पता..." फिर नताशा रोने लगी, "मैं अभी भी एंड्रयू से प्यार करती हूं, लेकिन अब वो मुझे कभी माफ नहीं करेगा."

"मुझे डर है कि तुम सही कह रही हो."

"मेरे लिए सब कुछ खत्म हो गया है," नताशा रो पड़ी.

"ऐसा कभी नहीं हो," पियरे ने उसे दिलासा दी. "मुझे विश्वास है कि तुम दिल की अच्छी हो."

वो अब अपनी कृतज्ञता जताने के लिए रो पड़ी. उसने चाहें कितना भी बुरा व्यवहार किया हो, पर वो जानती थी कि उसका एक सच्चा दोस्त था.

अध्याय 7
बोरोडिनो की लड़ाई

आगे, अथक और अजेय, फ्रांसीसी सेना पूर्वी यूरोप से मार्च करती गई ... जब तक अंत में वो रूस नहीं पहुंची.

नेपोलियन का लक्ष्य सरल था: वो चाहता था कि फ्रांस, दुनिया पर राज करे. यूरोप एक पितृभूमि बने, और पेरिस उसकी राजधानी हो. फ्रांस सभी राष्ट्रों की ईर्ष्या का पात्र बने. भले ही उन युद्धों में हजारों लोग मारे जाएं, लेकिन उसके नेक उद्देश्य ने उन मौतों को उचित ठहराया. इसलिए रूस पर युद्ध को वो सही मानता था. नेपोलियन को लगता था कि अंत में, उससे सभी के लिए समृद्धि होगी.

अपने नए लक्ष्य में नेपोलियन, मास्को पर नियंत्रण हासिल करना था. उस पूरे दौरान उसने अपनी सेना का इतनी भव्यता से नेतृत्व किया कि रूसी धरती पर हर झड़प में, फ्रांसीसियों की ही जीत हुई.

जब तक फ्रांसीसी सेना मास्को के पास एक गाँव बोरोडिनो में पहुँची, तब तक उनकी संख्या 133,000 थी, और रूसियों की संख्या 120,000 थी.

बोरोडिनो छोटी पहाड़ियों और जंगलों से घिरे पकी मक्का के समतल खेतों के बीच स्थित था. यहाँ, नेपोलियन निश्चित रूप से सफलता की उम्मीद कर रहा था. उसने रूसी सेनापतियों को लड़ाई के लिए ललकारा, जिसे उन्होंने स्वीकार किया.

पहाड़ियों के पीछे और जंगलों में नेपोलियन ने अपने आदमियों को तैनात किया. वो शतरंज के खेल की तरह अपनी चाल की योजना बना रहे थे और हमले के लिए तैयार थे. समतल मैदान, युद्ध का मैदान, सैनिकों की संगीनों से चमक रहा था.

हालाँकि फ्रांसीसी ताकत और रणनीति में श्रेष्ठ थे, फिर भी हर रूसी सैनिक का दिल एक और अधिक शक्तिशाली हथियार से जगमगा रहा था - वो दुश्मन से बेहद नफरत करते थे.

मॉस्को में, जैसे ही फ्रांसीसी सेना के आने की खबर फ़ैली, वैसे ही हवा में भय व्याप्त हो गया. लोग अपना-अपना सामान समेट कर पलायन करने लगे. मॉस्को के आसपास की सड़कों पर गाड़ियों, घोड़ों, गाड़ियों, पैदल चलने वालों की भीड़ लग गई. चहल-पहल वाले शहर में, अब सड़कें खाली हो गईं. सभी लोग भागना चाहते थे. इसलिए शहर में बहुत थोड़े ही लोग रह गए थे.

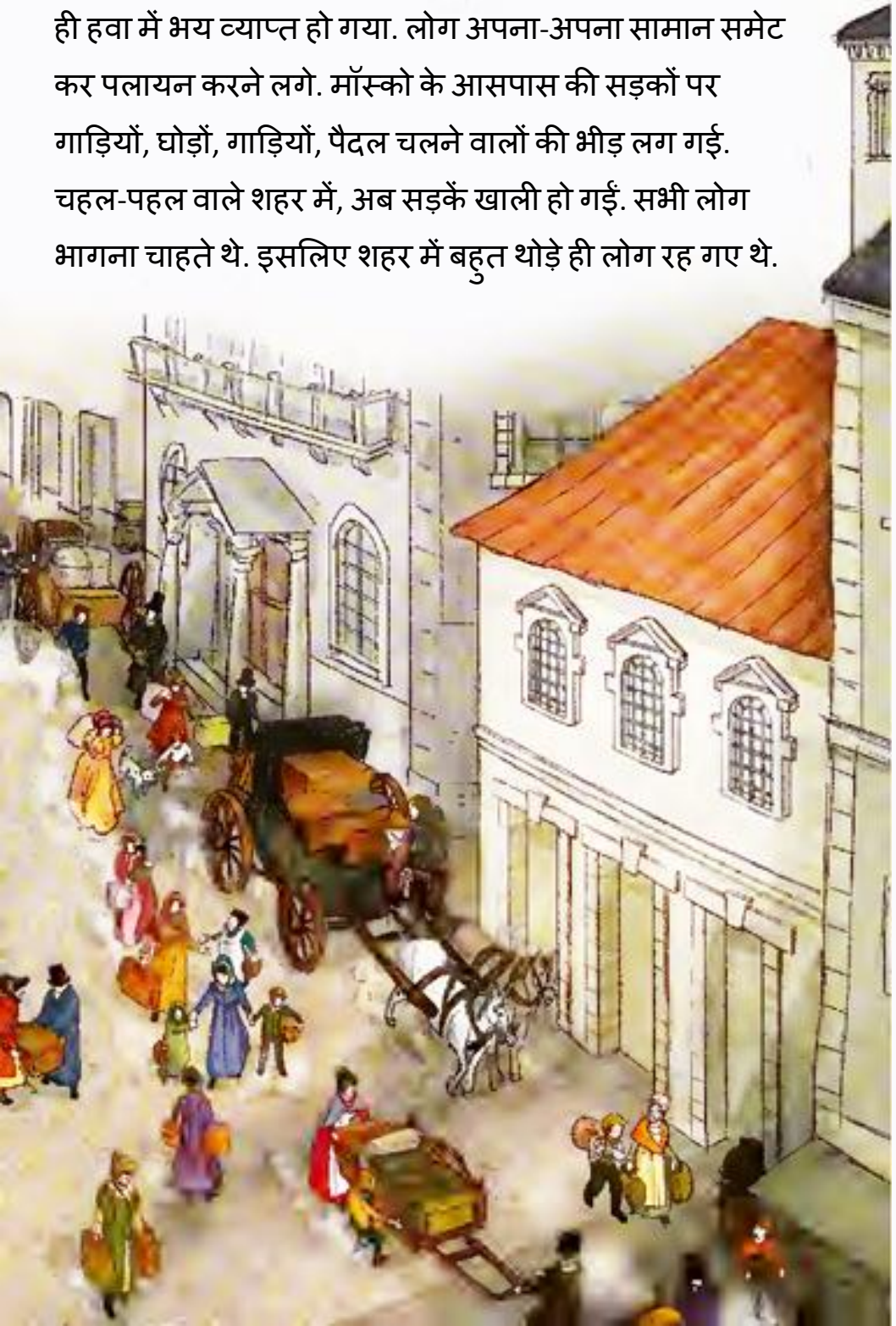

बोरोडिनो में एंड्रयू ने महसूस किया कि वो लड़ाई उसके लिए अब तक की सबसे भयानक लड़ाई होगी. उसने अगस्त की धूप में चमकते हुए भोजपत्र के पेड़ों, उनकी सफेद शाखाओं और हरी पत्तियों को देखा. फिर उसने सोचा, अगर मैं युद्ध में मर जाता हूँ, तो यह सब फिर भी मौजूद रहेगा, लेकिन वो मेरे लिए नहीं होगा ... उसने महसूस किया कि बाहर का दृश्य सुंदरता से बदलकर कुछ खतरनाक हो गया था और फिर उसकी रीढ़ की हड्डी में एक कंपकंपी फ़ैल गई.

तभी घोड़े पर सवार एक व्यक्ति को अपने पास आते देखकर वो हैरान रह गया.

"पियरे!" वो चिल्लाया. "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम सेना के सैनिक नहीं हो, और वैसे भी तुम्हें तो युद्ध से नफरत है."

"मुझे युद्ध में दिलचस्पी है. मैं देखना चाहता हूं कि क्या होता है."

"हम ज़रूर जीतेंगे. लेकिन युद्ध तुम्हारे लिए, या जनरलों के लिए या बेकार राजनेताओं के लिए कोई खेल नहीं है. हमें ईमानदार होना चाहिए. युद्ध वाकई एक भयानक चीज़ है."

फिर अपने दोस्त को खुश करने के लिए पियरे ने कहा, "नताशा ... वो अभी भी तुमसे प्यार करती है."

"अभी उसके बारे में बात मत करो," एंड्रयू चिल्ल्या.

अचानक कई सौ फ्रांसीसी बंदूकों ने फायरिंग शुरू कर दी.

तुरंत, एंड्रयू सरपट दौड़ा. वो चिल्ला रहा था,
"मैं उसे कभी माफ नहीं करूंगा."

पियरे ने अपने घोड़े पर सवार होकर युद्ध के मैदान को देखा. बारूद के धुएं में सैनिक आक्रमण कर रहे थे, वे गिर और चिल्ला रहे थे. उसने तोप के गोलों की आवाज़ सुनी और उन्होंने एक गगनभेदी गर्जना के साथ प्रहार किया. जैसे-जैसे तोप की मार और तेज होती गई, वैसे-वैसे पीली मक्का के खेत, मृत सैनिकों की लाशों से भरते गए.

पहले से कहीं अधिक, पियरे युद्ध से नफरत करने लगा. अचानक लौ की एक चकाचौंध चमक ने उसे नीचे फेंक दिया ...

जब वह पास आया, तो उसने देखा कि वहां की घास बिल्कुल झुलसी हुई थी, और उसका घोड़ा, उसकी ही तरह, जमीन पर पड़ा था, और चिल्ला रहा था और चिल्ला रहा था.

लेकिन वो अभी भी जीवित था.

दस घंटे बाद, नेपोलियन अविश्वास में अपना सिर हिला रहा था. इस युद्ध में भी पिछली लड़ाइयों जैसा ही सब कुछ होने के बावजूद - तैयारी, संगठन, सुदृढीकरण के बाद भी - इस बार फ्रांसीसी सेना जीती नहीं थी. फ्रांस की अजेय सेना अब खुद भाग रही थी, और वो रूसियों को वापस खदेड़ने में असमर्थ थी. क्यों? ऐसा क्यूँ? वो नेपोलियन समझ नहीं पा रहा था.

एंड्रयू समझ गया था. वो जानता था कि रूसी, बोरोडिनो की लड़ाई जीत रहे थे क्योंकि वे अपनी अपेक्षाओं और शक्ति से भी परे लड़े थे.

किसी लड़ाई का नतीजा, जैसा कि हर सैनिक जानता है, ऊपर के आदेशों से तय नहीं होता है. वो एक अदृश्य शक्ति तय करती है जिसे सेना की आत्मा कहा जाता है.

तभी उस गड़गड़ाहट के बीच एंड्रयू पर तोप के गोले का एक खोल गिरा, और उसने उसे जमीन पर पटक दिया. उसके पेट से खून बहने लगा, जिसने आसपास की घास को रंग दिया.

क्या इसी को मौत कहते हैं? मैं मरना नहीं चाहता ... मुझे जीवन से प्यार है, उसने सोचा. उसके आगे का उसे कुछ याद नहीं रहा क्योंकि तब तक गांव के किसानों ने उसे युद्ध के मैदान से उठा लिया था.

फील्ड अस्पताल में उसे होश आया. उसके फटे हुए मांस का ऑपरेशन हुआ और घाव पर पट्टी बंधी. उसके बगल में एक और घायल आदमी पड़ा था, जो चिल्ला रहा था क्योंकि उसका पैर कट गया था और वो खून से लथपथ बूट अभी भी पहने था.

"ओह ... ओह ..." वो आदमी चिल्लाया.

एंड्रयू ने देखा कि वो आदमी अनातोले था. वो अभी भी चौंधाया हुआ था उसे केवल हल्की सी याद थी कि अनातोले ने उसके साथ क्या किया था. पर जैसे ही उसकी याददाश्त ठीक हुई उसने नताशा के बारे में सोचा - कि वो उससे कितना प्यार करता था. उसे एहसास हुआ कि वो अब भी उससे प्यार करता था. नताशा और अनातोले दोनों के लिए, उसका ह्रदय दया और क्षमा से भर गया. वो धीरे से रोया, उसने उनके लिए प्यार भरे आंसू बहाए, और अपने बचपन की सीख को याद किया - अपने दुश्मनों से प्यार करो. वो फिर से रोया, इस बार युद्ध के मैदान में मारे गए सभी हजारों निर्दोष सैनिकों के लिए.

अध्याय 8
मास्को का जलना

नेपोलियन को लगा जैसे वो कोई बुरा सपना देख रहा हो. जैसे ही सर्दियों के महीने बीते फ्रांसीसी सेना ने अपने लक्ष्य, मास्को तक पहुंचने की कोशिश की. वहां पहुँचने पर उन्हें पता लगा कि रूसी, मास्को से अस्सी मील पीछे हट गए थे.

मास्को शहर लगभग सुनसान था. इससे भी बदतर वो जल रहा था. हफ़्तों तक जलती हुई इमारतों, काली सड़कों, बर्बाद हुए महलों, ओपेरा हाउस, दुकानों, सरायों के ऊपर उग्र लाल आसमान चमक रहा था.

यह कैसे हुआ वो किसी को नहीं पता था? फ्रांसीसियों ने सोचा कि रूसियों ने खुद अपने शहर को जला डाला था, जबकि रूसियों ने फ्रांसीसी को उसका दोषी ठहराया था. मास्को को शायद कभी तो जलना ही था. क्योंकि वो शहर पूरी तरह लकड़ी का बना था. और वो शहर लापरवाह, भूखे, थके हुए सैनिकों और कुछ नाराज नागरिकों का था जो सभी शिविर में आग जलाते थे, खाना बनाते थे, धूम्रपान करते थे और लूटपाट करते थे ... और इसलिए शहर आग की लपटों में स्वाहा हो गया था.

अंत में फ्रांसीसी सेना ने अपना पुरस्कार जीता था, लेकिन वो एकदम बेकार किसी काम का नहीं था.

जब नेपोलियन को बताया गया कि मास्को बिल्कुल खाली और वीरान है, तो वो इधर-उधर टहलता रहा. एक विजयी हीरो के रूप में शहर में घुसने की बजाए उसे एक खाली जीत के अलावा कुछ भी हासिल नहीं हुआ था. फ्रांसीसी सेना अब एक मधुमक्खियों के छत्ते के समान थी जिसमें रानी मधुमक्खी नदारद थी. अब सेना खोई हुई, अव्यवस्थित, दिशाहीन थी. फिर फ्रांसीसी सेना ने मास्को से भागने की ठानी लेकिन अब उनके सामने क्रूर रूसी सर्दी मुंह बाए खड़ी थी.

वो सर्दी सेना के लिए झेल पाना बहुत मुश्किल थी. फ्रांसीसी सैनिक ठंड में जमने लगे और रूसी उनसे घृणा करते थे. फिर एक-एक करके फ्रांसीसी सैनिक मरने लगे. फ्रांस की गौरवशाली सेना, बोरोडिनो में अपनी हार के बाद एक पीड़ित जानवर की तरह धीरे-धीरे करके मर रही थी. नेपोलियन का फ्रांस को विश्व शक्ति बनाने का सपना चकनाचूर हो गया था.

नताशा, मास्को छोड़ने वाले अंतिम लोगों में से एक थी. वह अपने माता-पिता के पास लौटने के लिए एक गाड़ी में अपना सामान पैक कर रही थी, जब उसने घायल रूसी सैनिकों के एक काफिला को देखा.

"क्या मैं कुछ मदद कर सकती हूँ?" उसने प्रभारी अफसर से पूछा.

"ज़रूर," उस आदमी ने एक सैनिक की ओर इशारा किया जो लगभग बेहोशी की हालत में था.

"आप उसे अपने साथ ले जा सकती हैं. वो हमारी रफ़्तार को धीमा कर देगा और उसकी तबियत बेहतर नहीं होगी. हमारे मुकाबले आप शायद उसकी बेहतर देखभाल कर पाएंगी."

वो एंड्रयू था. दो सिपाही एंड्रयू को उठाकर नताशा की गाड़ी में ले गए.

नताशा ने एंड्रयू के सिर के नीचे एक तकिया खिसका दिया. उसका चेहरा इतना कोमल लग रहा था, कि नताशा को इतना यकीन ज़रूर हुआ कि वो मौत के बहुत करीब था.

फिर एंड्रयू ने अपनी आँखें खोलीं, "नताशा ... कितनी अजीब बात है कि तकदीर हमें दुबारा एक-साथ लाई है."

नताशा ने उसका हाथ पकड़कर अपने होठों से छुआ, "मुझे माफ़ कर दो,"

"किसलिए?"

"मैंने जो किया है उसके लिए," वो लड़खड़ा गई. "मैं तुमसे पहले से कहीं ज्यादा प्यार करती हूं.''

उसकी आँखों को प्रेम और करुणा से चमकते देखकर, एंड्रयू ने तड़पते हुए नताशा से पूछा, "क्या मैं जीवित रहूँ?"

"ओह हां!" वो चिल्लाई और फिर उसने उसके बालों को सहलाया.

"कितना अच्छा होगा ..." एंड्रयू फिर से आँखें बंद करके बड़बड़ाया.

फिर जागते हुए उसने सोचा : प्रेम क्या है? प्रेम ही जीवन है, प्यार सब कुछ है. मैं सब कुछ समझता हूं क्योंकि मैं प्यार करता हूं. मरने का मतलब है कि मैं - जो प्रेम का एक कण हूँ, अपने स्रोत पर लौट जाऊँगा.

अपनी आखिरी ऊर्जा को इकट्ठा करते हुए एंड्रयू फुसफुसाया, "मेरे बेटे, निकोलस ... उसकी देखभाल ज़रूर करना ..."

एंड्रयू मरना नहीं चाहता था, लेकिन मृत्यु, जीवन के द्वार में से उसे उठाकर ले गई थी.

अध्याय 9
सोने का दिल

जब पियरे बोरोडिनो में था, तो उन्हें अपनी पत्नी के बारे में एक संदेश मिला. हेलेन की मॉस्को में अचानक मौत हो गई थी.

पियरे फ़ौरन मास्को पहुँचा पर उसने पाया कि वहां पूरे शहर में आग लगी थी. जब वो छतों के नीचे आग की लपटों को देख रहा था तभी एक अजनबी महिला चिल्लाते हुए उसके पैरों के सामने आकर गिर पड़ी.

"वहां मेरी बेटी है! उसे जलने मत देना!"

"पर वो कहाँ है?"

"वो घर में है. हम सब बच गए, लेकिन वो घर में फंसी है ..."

"मैं उसे बचा लूँगा," पियरे ने वादा किया.

वो जलते घर के अंदर दौड़ा हुआ गया और उसने बच्ची को उठाया. बच्ची ने उसे एक डरे हुए छोटे जानवर की तरह काट लिया. लेकिन पियरे उसे उठाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाने में सफल हुआ.

उसके बाद, पियरे मास्को में ही रहा. उससे जो कुछ बना उसने लोगों की मदद की. इत्तिफाक से उसका खुदका घर आग से बच गया था.

जैसे ही सर्दी वसंत में बदली, हाल के दिनों की तीन महान घटनाएं पियरे को सताने लगीं : हेलेन की मृत्यु, एंड्रयू की मौत और युद्ध की भयानक पीड़ा. जीवन किस लिए है? संदेह की काली उदासी आखिरकार तब उठी जब उसे इस प्रश्न का जवाब मिला : हर चीज में अच्छाई की तलाश करो, जीवन को समझो और प्रेम करो.

वह नताशा के बारे में सोचने लगा. वो बेचारी इस मुसीबत का कैसे मुकाबला कर रही होगी?

पियरे ने पाया कि नताशा गांव में अपने माता-पिता के साथ रह रही थी. जब वह उससे मिलने गया, तो वो अपनी उम्र से बहुत बड़ी और लापरवाह लग रही थी. उन्होंने एंड्रयू के बारे में बात की.

"अंत में मुझे एंड्रयू को देखकर बहुत खुशी हुई ... ," नताशा ने कहा. उसकी आवाज टूट रही थी.

"वो शांत था? उसे मृत्यु का कोई डर नहीं था? हाँ, वो वास्तव में खुश था," पियरे आगे को झुक गया. उसकी आँखों में आँसू भर आए.

वो एक शुरुआत थी. प्रेम समय और परिस्थिति के बीच अचानक घायल दिलों में प्रवेश कर जाता है. न तो पियरे और न ही नताशा को यह विश्वास था कि वे नए जीवन और खुशी के लिए तैयार थे. फिर भी प्यार ने उनका इंतजार किया.

नताशा को एंड्रयू के शब्द याद आए: पियरे के पास सोने का दिल है.

पियरे ने सोचा: मैं उसके बिना जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकता.

उन्होंने शादी की. वे अपने बच्चों और एंड्रयू के बेटे निकोलस से घिरे रहने से काफी खुश रहते थे.

"तुम एक अद्भुत पिता हो, पियरे," नताशा ने बड़बड़ाते हुए कहा. फिर उसने अपने नवीनतम बच्चे को गले लगाया.

पियरे ने एक संतुष्ट आह के साथ अपना हाथ उसके चारों ओर लपेटा. उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका जीवन कितना आनंदमय हो गया था.

और युवा निकोलस? वो एक स्नेही और बुद्धिमान छोटा लड़का था. वो जानता था कि पियरे उसके पिता का दोस्त थे, और उसने यह भी अनुमान लगाया कि उसके पिता नताशा से प्यार करते थे.

"मैं अंकल पियरे से प्यार करता हूँ," निकोलस ने खुद से कहा. "वो अच्छे और दयालु हैं, लेकिन मैं अपने पिता को कभी नहीं भूलूंगा. जब मैं बड़ा हो जाऊंगा, तो मैं उनकी ही तरह बहादुर बनूंगा. मैं कुछ ऐसा करूंगा जिससे उन्हें मुझ पर गर्व हो."

लियो (लेव निकोलायेविच) टॉल्स्टॉय (1828-1910)

टॉल्स्टॉय का जन्म रूस में 9 सितंबर, 1828 को निकोलाई टॉल्स्टॉय और उनकी पत्नी को हुआ था. जब टॉल्स्टॉय बहुत छोटा था तभी उसे माता-पिता दोनों की मृत्यु हो गई और फिर उसके रिश्तेदारों ने उसे पाला.

विश्वविद्यालय की परीक्षा में असफल होने के बाद, टॉल्स्टॉय ने पारिवारिक संपत्ति (एस्टेट) को चलाने की कोशिश की, लेकिन वो इसमें पूरी तरह से सफल नहीं हुए. इसलिए अपने भाई द्वारा प्रोत्साहित किए जाने के बाद वो सेना में भर्ती हो गए और समय के साथ उन्होंने लिखना भी शुरू कर दिया. क्रीमियन युद्ध के दौरान, उन्होंने "सेवस्तोपोल कहानियां" लिखीं. उन कहानियाँ को एक त्वरित सफलता मिली.

1862 में, उन्होंने सोफिया एंड्रीवाना बेहर्स से शादी की, और अगले बीस साल अपनी एस्टेट पर बिताए, अपने परिवार का पालन-पोषण किया, और खूब लिखाई की. यह रूस में भारी उथल-पुथल का समय था, टॉल्स्टॉय ने जीवन, दर्शन, ईश्वर और धर्म पर चिंतन करते हुए घंटों बिताए, इन सभी की चर्चा उन्होंने "युद्ध और शांति" और उसके बाद के उपन्यास "अन्ना करेनिना" में की.

टॉल्स्टॉय का 82 वर्ष की आयु में निधन हुआ. आज उन्हें रूस के सबसे महान उपन्यासकार और "युद्ध और शांति" को दुनिया के महान उपन्यासों में से एक के रूप में जाना जाता है.

समाप्त